

प्रेषक,

निदेशक,

बाल विकास सेवा एवं पुष्टाहार,

उ०प्र०।

सेवा में,

समस्त जिला कार्यक्रम अधिकारी/प्रभारी,

उ०प्र०।

पत्रांक /बा०वि०परि०/2020-21

दिनांक 01 जुलाई, 2020

विषय: दिनांक 01 से 07 अगस्त, 2020 के मध्य विश्व स्तनपान सप्ताह मनाये जाने के संबंध में।

कृपया मिशन निदेशक, राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन, उ०प्र० के पत्र दिनांक 27.07.2020 का सन्दर्भ ग्रहण करने का कष्ट करें, जिसके क्रम में स्तनपान शिशु की वृद्धि व विकास के लिये एक आदर्श व्यवहार है। स्तनपान शिशु का पहला टीकाकरण है जो उसे मानसिक तथा शारिरिक रूप से स्वस्थ रखता है। मां के दूध में पाये जाने वाले पोषक तत्व शिशु की रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ावा देते हैं तथा उसको बाल्यावस्था में होने वाली बीमारियों से बचाते हैं।

आप अवगत हैं कि प्रत्येक वर्ष 1-7 अगस्त के मध्य स्तनपान सप्ताह मनाया जाता है। स्तनपान को बढ़ावा देने के लिये वैश्विक थीम का भी निर्धारण होता है और वर्ष 2020 का थीम है:-

Support Breastfeeding for a healthier planet

पर्यावरण सुरक्षा एवं अच्छे स्वास्थ्य व पोषण के लिये स्तनपान को बढ़ावा दें

पोषण अभियान के अन्तर्गत स्तनपान एक प्रमुख हस्तक्षेप है। इस व्यवहार के प्रोत्साहन हेतु यह अत्यन्त आवश्यक है कि आंगनबाड़ी कार्यकर्त्री नियमित रूप से माँ और समुदाय के साथ संपर्क में रहे, जिससे गर्भवती महिलाओं और जन्म के समय से दो साल तक के बच्चों को नियमित रूप से सहयोग मिलता रहे।

कोविड के दृष्टिगत समुदाय आधारित गतिविधियों का आयोजन संभव नहीं है। इस क्रम में यह निर्णय लिया गया है कि इस विशेष सप्ताह के दौरान आंगनबाड़ी कार्यकर्त्री द्वारा डोर टू डोर पुष्टाहार वितरण के दौरान प्राथमिकता के आधार पर निम्नानुसार लाभार्थियों के घर संदेश दिये जायेंगे:

- नवजात शिशु,
 - छः माह पूर्ण कर चुके बच्चों की संख्या
 - 2 वर्ष से कम कुपोषित/बीमार बच्चे
- नवजात शिशु के घर दिये जाने वाले संदेश
- सभी धात्री मातायें सावधानियां अपनाते हुये कोविड के दौरान भी स्तनपान जारी रखें।

- साफ हाथों से ही नवजात को छुये। हाथों को साबुन से कम से कम 40 सेकंड तक साफ करे।
 - यदि संभव हो तो मां दूध पिलाते समय नाक व मुह पर पर मास्क लगायें। यदि संक्रमण की पुष्टि हो गई है अथवा संभावित संक्रमण है जो अनिवार्यतः मास्क लगायें।
 - जिस सतह पर बैठ कर वह दूध पिला रही है उसको साफ रखे/सैनिटाइज करें।
 - यदि किसी कारणवश मां बीमार है और दूध पिलाने में असमर्थ है तो परिवार के सहयोग से दूध को साफ हाथों से कटोरी में निकालते हुये चम्मच से पिलायें। यदि मां के लिये बिलकुल संभव नहीं है तो वह चिकित्सीय परामर्श करे।
 - शिशु का साप्ताहिक वजन करवायें तथा उसको मातृ एवं सुरक्षा कार्ड में अंकित करवायें।
 - छः माह से पूर्व पानी, कृतिम दूध या फिर बोतल का प्रयोग बिलकुल नहीं करें। इससे दस्त व अन्य संक्रमण हो सकते हैं और शिशु और कुपोषित हो सकता है।
- छः माह पूर्ण कर चुके बच्चों के घर दिये जाने वाले संदेश
- मां का दूध जारी रखें ।
 - घर पर बना मुलायम, तरल, उपरी आहार 2-3 चम्मच देना शुरू करें। धीरे-धीरे मात्रा और विविधता बढ़ायें।
 - साफ हाथों से पकाये , साफ हाथों से खिलायें।
 - व्यवसायिक शिशु आहार जैसे कि डिब्बा बंद दूध, बोतल का प्रयोग बिलकुल ना करें। संक्रमण का खतरा बढ़ेगा।
 - हर माह बच्चे का वजन करायें व मातृ एवं सुरक्षा कार्ड में अंकित करवायें।
- 2 वर्ष से कम कुपोषित बच्चे/बीमार बच्चे के घर दिये जाने वाले संदेश
- मां का दूध व घर का बना खाना देते रहें।
 - बीमारी में बच्चे के खान-पान को रोके नहीं। वह और दुबला हो जायेगा।
 - बच्चे की पसंद का खाना दे जिससे कि वह आसानी से गृहण कर ले।
 - बीमारी से उबरने के बाद अतिरिक्त आहार दे, इससे खोई हुई उर्जा प्राप्त होगी।
 - प्रत्येक माह बच्चे का वजन करायें तथा वृद्धि रेखा की दिशा देखें। यदि नीचे जाती रेखा है तो तुरंत डॉक्टर से संपर्क करें।

याद रखें कि समस्त गतिविधियां सोशल डिस्टैन्सिंग और मास्क पहनते हुये ही संपादित की जायेंगी।

उपरोक्त गतिविधियों पर निर्देशानुसार कार्यवाही सुनिश्चित करें।

(डा० सारिका मोहन)
निदेशक

पृष्ठांकन संख्या: C-558 तद्दिनांक।

प्रतिलिपि: निम्नलिखित को सूचनार्थ एवं आवश्यक कार्यवाही हेतु प्रेषित।

1. अपर मुख्य सचिव, बाल विकास एवं पुष्टाहार, उ०प्र० शासन।
2. निदेशक, राज्य पोषण मिशन, उ०प्र०।
3. समस्त जिलाधिकारी, उ०प्र०।
4. समस्त मुख्य विकास अधिकारी, उ०प्र०।
5. पोषण विशेषज्ञ, यूनिसेफ।
6. गार्ड फाइल।

(डा० सारिका मोहन)
निदेशक